यीशु: उसका जीवन भविष्यवाणी का पूरा होना

यीशु ने सोचा कि भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करने की उसकी योग्यता स्पष्ट प्रमाण बन जाएगी कि वह परमेश्वर का पुत्र है, मात्र मनुष्य नहीं: ''अब मैं उसके होने से पहिले तुम्हें जताए देता हूं कि जब हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूं'' (यूहन्ना 13:19)। इसी तरह, यदि लोग परमेश्वर के उन सभी भविष्यवक्ताओं की ओर ध्यान देते जिन्होंने बाइबल लिखी थी, तो वे मान जाते कि पुराने नियम की भविष्यवाणियां भोर होने और सुबह का सूर्य उदय होने तक रात के अन्धेरे में चिरागों की तरह चमक रही थीं (देखिए 2 पतरस 1:19)। पुराने नियम के भविष्यवक्ता केवल अपने समय के लोगों के साथ ही नहीं बल्कि आज तक हमारे साथ भी बातें करते हैं (1 पतरस 1:10–12)।[1]

कुंवारी का पुत्र (यशायाह 7:14)

735 ई.पू. में सीरिया और इस्राएल के उत्तरी राज्यों ने मिलकर दक्षिणी राज्य यहूदा के विरुद्ध एक संघ बना लिया था। यहूदा ''ऐसे कांप उठा जैसे वन के वृक्ष वायु चलने से कांप जाते हैं'' (यशायाह 7:2)। अनुग्रहकारी रहने वाले परमेश्वर ने यहूदा के राजा आहाज़ को सांत्वना देने के लिए यशायाह को भेजा; परन्तु आहाज़ दुष्ट और दम्भी था। आहाज़ के तर्कहीन और घटिया उत्तर से परमेश्वर का अनुग्रह थम गया क्योंकि वह आहाज़ से ''ऊब'' गया था। राजा ने परमेश्वर की ओर से मिलने वाले चिह्न को लेने से इन्कार कर दिया था कि वह आहाज़ को सीरिया और एप्रैम षड्यन्त्र से निकाल लेगा। उसके इन्कार करने पर, परमेश्वर ने क्रोध में उत्तर दिया कि वह आहाज़ को चिह्न तो देगा ही, परन्तु यह चिह्न ऐसा होगा जो उसे पसन्द नहीं आएगा:

> इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिह्न देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी (यशायाह 7:14)।

किसी प्रसिद्ध युवती ने जिसे आहाज़ जानता था, शीघ्र ही उसके साथ विवाह करना था और एक पुत्र को जन्म देना था जिसका असामान्य सा नाम रखा जाना था: इम्मानुएल, जिसका अर्थ है ''परमेश्वर हमारे साथ।'' इससे पहले कि वह बालक बड़ा हो, इन दो देशों की धमकी छिन-भिन्न हो जानी थी। परन्तु परमेश्वर ने कुछ और ही कहा था: यहूदा के लिए इस्राएल और सीरिया तो खतरा नहीं होंगे, परन्तु अश्शूर उसके लिए खतरा बना रहेगा। वास्तव में, अश्शूर ने यहूदा के देश को इस प्रकार से घेर लेना था कि यहूदी लोग भूखे मरने लगे थे। भविष्यवक्ता के अनुसार, एक आदमी एक गाय और दो भेड़ें पाल सकेगा (यशायाह 7:21, 22)। इसलिए दूध ही मिलेगा और देश के लोग मक्खन और शहद खाएंगे।

फिर, भविष्यवाणी के इस बालक ने, भोजन के लिए मक्खन और शहद खाना था (यशायाह 7:15)। लड़के का नाम इम्मानुएल अर्थात ''परमेश्वर हमारे साथ'' होना था। उसने देश को दण्ड देने के लिए यहूदा के साथ होने का परमेश्वर का चिह्न होना था! परमेश्वर लोगों के साथ दो तरह से हो सकता है! परमेश्वर ने यहूदा के साथ होना था, परन्तु उसे आशीष देने के लिए नहीं; बल्कि यहूदा को दण्ड देने के लिए। आहाज़ और उसके लोग विश्वासहीन थे और परमेश्वर ने अपने वचन के अनुसार ही करना था।

यशायाह 7:14 का अल्पकालीन अर्थ यही था, परन्तु भविष्यवक्ता की भाषा में आहाज़ के लिए स्थानीय से बढ़कर कुछ अधिक अर्थात आठवीं शताब्दी ई.पू. का चिह्न था। यशायाह केवल आहाज़ के जीवित रहते इस भविष्यवाणी के अल्पकालीन पूरा होने की ओर इशारा नहीं कर रहा था, बल्कि उसका इशारा कई सदियों बाद मरियम और यूसुफ के दिनों की ओर था। आमतौर पर भविष्यवाणियों के अर्थ मूल-भूत और परोक्ष होते थे जो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रासंगिक होती थीं। परमेश्वर के स्वर्गदूत ने प्रकट किया कि मरियम के गर्भ में बच्चे का होना व्यभिचार के कारण नहीं बल्कि परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए यशायाह की भविष्यवाणी के अनुसार था (मत्ती 1:23)।

आठवीं शताब्दी ई.पू. और पहली शताब्दी में यशायाह 7:14 के पूरा होने में अन्तर है, फिर भी इनमें इतनी समानताएं हैं कि पवित्र आत्मा ने पहले वाले को आधार बनाकर बाद वाले के लिए भविष्यवाणी की। *अल्माह* शब्द के व्यापक अर्थ में (''युवती'') आवश्यक नहीं कि कुंवारी से जन्म आठवीं शताब्दी ई.पू. में ही हो, और ऐसा होने की बात लिखित रूप में मिलती भी नहीं है। परन्तु, पहली शताब्दी में एक विशेष प्रकार की युवती (एक कुंवारी; यू.: *parthenos*; मत्ती 1:23) कुंवारी ही तो मां बन गई थी।

आहाज़ के दिनों में पैदा हुआ लड़का केवल नाम से ही इम्मानुएल ''परमेश्वर हमारे साथ'' था परन्तु वह वास्तव में परमेश्वर नहीं था। इसके विपरीत, मरियम के समय में इम्मानुएल, ''परमेश्वर हमारे साथ'' नामक लड़का पैदा हुआ, जो वास्तव में परमेश्वर *था।* आहाज़ के समय वाला बालक केवल अपने नाम से ही एक चिह्न था परन्तु मरियम का पुत्र अपने नाम व गुण से एक चिह्न था।

आहाज़ के दिनों में जिस बालक की भविष्यवाणी की गई थी वह इस बात का प्रतीक

था कि परमेश्वर यहूदा के साथ होगा। जिस बालक की भविष्यवाणी मरियम के समय की गई थी वह इस बात का प्रतीक था कि परमेश्वर सारे संसार के साथ होगा (यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 2:2)। आहाज़ के दिनों में मिलने वाला चिह्न एक चेतावनी था कि परमेश्वर लोगों के साथ उन्हें दण्ड देने के लिए होगा। मरियम के दिनों में मिलने वाला चिह्न यह शुभ समाचार था कि परमेश्वर आशीष देने के लिए उनके साथ होगा।

यदि मरियम का बच्चा कुंवारी से पैदा न होता, तो उसने सच्चाई से इम्मानुएल, ''परमेश्वर हमारे साथ'' नहीं होना था, क्योंकि फिर से हमारी तरह ही सामान्य मनुष्य होना था और वह परमेश्वर-मनुष्य नहीं हो सकता था। फिर, उसने व्यभिचार से पैदा हुआ एक अवैध पुत्र होना था। ऐसा होता, तो यीशु ईश्वरीय न होता, और उसका धर्म एक धोखा होता। ऐसी स्थिति में, नाम इम्मानुएल अर्थात ''परमेश्वर हमारे साथ'' एक मज़ाक होता।

इब्राहीम का वंश (उत्पत्ति 22:18)

प्रभु ने भविष्यवाणी की कि इब्राहीम संसार के लिए आशीष का कारण होगा। उत्पत्ति 12:3 में उसने ''तेरे द्वारा'' वाक्यांश के साथ, पिछली आयत में ''तेरे वंश के द्वारा'' जैसे वाक्य का इस्तेमाल किया। यद्यपि उत्पत्ति 22:17 के शब्द ''वंश'' का इस्तेमाल इब्राहीम की आगे की पीढ़ियों (अर्थात, पूरी इस्राएल जाति) के लिए इस्तेमाल किया गया, परन्तु इसका इस्तेमाल उत्पत्ति 22:18 में इस प्रकार नहीं किया गया। आयत 18 का शब्द ''वंश'' इब्राहीम के वंशजों में से एक अर्थात यीशु के लिए विशेष भविष्यवाणी तक सीमित है। गलतियों 3:16 में पौलुस उसी आयत की बात कर रहा था जब उसने कहा, ''... [परमेश्वर] यह नहीं कहता, कि वंशों को; जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि तेरे वंश को: और वह मसीह है।'' इस प्रकार आत्मा की प्रेरणा पाए हुए नए नियम के एक लेखक ने हमें पुराने नियम की भविष्यवाणी का स्पष्ट अर्थ बड़ी अच्छी तरह से समझा दिया।

नये नियम के एक और वक्ता ने उत्पत्ति 22:18 के मसीह के महत्व की ओर इशारा किया। यरूशलेम के मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में, पतरस ने कहा था, ''तुम भविष्यवक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो जो परमेश्वर ने तुम्हारे बापदादों से बान्धी, जब उसने इब्राहीम से कहा, कि तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएंगे'' (प्रेरितों 3:25)।

एक गलीली धर्म सेवक (यशायाह 9:1, 2)

आने वाले मसीहा के लिए पुराने नियम की बहुत सी भविष्यवाणियां निकट भविष्य में उन्हीं में पूरी होनी थी। परन्तु, उनमें से कइयों का पुराने नियम में कोई अर्थ नहीं है। आठवीं शताब्दी ई.पू. में ''सुसमाचार के भविष्यवक्ता'' यशायाह ने उन जैसी कई भविष्यवाणियां लिखीं :

> तौभी संकट-भरा अन्धकार जाता रहेगा। पहिले तो उसने जबूलून और नपताली के देशों का अपमान किया, परन्तु अन्तिम दिनों में ताल की ओर यरदन के

पार की अन्यजातियों के गलील को महिमा देगा।

जो लोग अन्धियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अन्धकार में भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी (यशायाह 9:1, 2)।

''बाद में'' गलील के देश ने महिमा पाकर सदा के लिए प्रसिद्ध हो जाना था। स्पष्टतया, स्वर्ग छोड़ने से पहले ही, यीशु ने पृथ्वी पर अपनी सेवकाई का अधिकांश समय गलील में बिताने की योजना बनाई थी:

जब उसने यह सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया, तो वह गलील को चला गया। और नासरत को छोड़कर कफरनहूम में जो झील के किनारे जबूलून और नपताली के देश में है, जाकर रहने लगा। ताकि जो वचन यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो।

कि जबूलून और नपताली के देश,
झील के मार्ग से यरदन के पार अन्यजातियों का गलील। जो लोग अन्धकार में बैठे थे उन्होंने बड़ी ज्योति देखी,
और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे,
उन पर ज्योति चमकी
(मत्ती 4:12-16)।

एक अभिषिक्त प्रचारक (यशायाह 61:1-3)

एक अभिषिक्त प्रचारक ने आठवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व यशायाह की पत्री के द्वारा भविष्यवाणी की थी:

प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिए भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं; कि बंधुओं के लिए स्वतन्त्रता का और कैदियों के लिए छुटकारे का प्रचार करूं; कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं; कि सब विलाप करने वालों को शान्ति दूं। और सिय्योन के विलाप करने वालों के सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बान्ध दूं, कि उनका विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं और उनकी उदासी हटाकर यशा का ओढ़ना ओढ़ाऊं; जिससे वे धर्म के बांजवृक्ष और यहोवा के लगाए हुए कहलाएं और जिससे उसकी महिमा प्रगट हो (यशायाह 61:1-3)।

पहली शताब्दी में तीस वर्ष के एक अशिक्षित बढ़ई ने आराधनालय में शिक्षकों को चकित कर दिया था:

> और वह [यीशु] नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिए खड़ा हुआ। यशायाह भविष्यवक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उस ने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था।
>
> कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इस लिए कि उस ने कंगालों को सुसमचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है ... (लूका 4:16-18)।

उसने भविष्यवाणी की सुन्दर बातों को पढ़कर पुस्तक बन्द कर दी, और दृढ़तापूर्वक यह ऐलान किया, ''कि आज यह लेख तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है'' (लूका 4:21)।

यीशु को छोड़ किसी के लिए भी ऐसा दावा करना उसकी सोच से बहुत परे होगा। क्योंकि यीशु के लिए, ऐसा दावा करना स्वाभाविक और उचित था।

मूसा जैसा एक नबी (व्यवस्थाविवरण 18:15)

सीनै पर्वत पर पहाड़ के कांपने पर वहां इस्राएली भी कांप उठे थे। उन्होंने बादल को गर्जते, बिजली को चमकते और पर्वत पर छाई काली घटा देखी थी जिससे पूरा पर्वत धुएं से भर गया था (निर्गमन 19:16-18; 20:18)। जब परमेश्वर के मुख से दस आज्ञाएं सुनाई गईं तो वे थरथरा उठे थे। इन भयभीत लोगों ने मूसा से बिनती की थी कि वह ही उनके साथ बात करे, कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर के इतना निकट होने के कारण वे मर जाएं। मूसा ने यहोवा से बात की और उसने मूसा जैसे एक और प्रतिनिधि को ईश्वरीय प्रवक्ता बना कर उसे परमेश्वर का संदेश सौंप दिया:

> तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना यह तेरी उस बिनती के अनुसार होगा, जो तू ने होरेब पहाड़ के पास सभा के दिन अपने परमेश्वर यहोवा से की थी, कि मुझे न तो अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनना, और न वह बड़ी आग फिर देखनी पड़े, कहीं ऐसा न हो कि मर जाऊं (व्यवस्थाविवरण 18:15, 16)।

परमेश्वर ने सोचा कि एक प्रवक्ता के लिए लोगों की बिनती सही थी। उसने मूसा से कहा, ''कि वे जो कुछ कहते हैं सो ठीक कहते हैं'' (व्यवस्थाविवरण 18:17) और अपनी प्रतिज्ञा दोहराई:

> मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगा; और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा; और जिस-जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उनको सुनाएगा। और जो मनुष्य मेरे वह वचन जो वह मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा, तो मैं उसका हिसाब उससे लूंगा (व्यवस्थाविवरण 18:18, 19)।

मूसा के जैसा एक नबी आना था। निश्चय ही, मूसा कोई साधारण नबी नहीं था। उसके साथ परमेश्वर ''आम्हने साम्हने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता [था]; और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता'' था (गिनती 12:8)। इस्राएल में मूसा से बड़ा कोई नबी नहीं था, ''जिससे यहोवा ने आम्हने साम्हने बातें कीं'' (व्यवस्थाविवरण 34:10)। इसलिए, उसका उत्तराधिकारी कोई साधारण नबी नहीं हो सकता था।

प्रभु ने कहा था, कि जिस भविष्यवक्ता का वायदा किया गया था, ''उसके मुंह में'' (व्यवस्थाविवरण 18:18) परमेश्वर का वचन होगा। उसे और उसकी बातों को ग्रहण करने का अर्थ परमेश्वर को ग्रहण करना होगा, परन्तु उसे और उसकी बातों को नकारने का अर्थ परमेश्वर को नकारना होगा (व्यवस्थाविवरण 18:19)।

मूसा के लोग कभी भी असाधारण नबी के इस वायदे को भूले नहीं थे। वे अपने बच्चों और उनके बच्चों के बच्चों को उसके आने की राह देखने का परामर्श देते रहते थे। वे उसे ''वह भविष्यवक्ता'' (यूहन्ना 1:21, 25) कहने लग पड़े थे। मूसा से पन्द्रह शताब्दियों बाद, यहूदी लोगों को एकदम व्यवस्थाविवरण 18:15 की भविष्यवाणी का ध्यान आया, और उन्होंने यूहन्ना से विशेष तौर पर पूछा, ''क्या तू वह भविष्यवक्ता है ?'' (यूहन्ना 1:21)। यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं था, परन्तु वह प्रतिज्ञा किया हुआ भविष्यवक्ता नहीं था और उसने प्रश्न पूछने वालों से साफ़-साफ़ कह दिया था कि वह वह नबी नहीं है।

परन्तु, यूहन्ना जिसने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया (यूहन्ना 10:41), का एक सम्बन्धी था जो पांच रोटियों और मछली के दो छोटे टुकड़ों को इतना बढ़ा सकता था कि दस हज़ार लोगों के खाने के बाद भी वे बच सकती थीं (देखिए यूहन्ना 6:9, 10)। कायल करने वाले ऐसे चिह्न के कारण यहूदी लोग व्यवस्थाविवरण 18:15 में मूसा की प्रतिज्ञा पर विचार करने और हैरान होकर कहने लगे, ''वह भविष्यवक्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है'' (यूहन्ना 6:14)।

यीशु ने न केवल यह दिखाया कि वह प्रकृति का मालिक है, बल्कि उसने बातें भी ऐसी कीं जो कभी किसी मनुष्य ने नहीं की थीं (यूहन्ना 7:46)। जब उसने एक दिन मन्दिर में सांकेतिक घोषणा की थी, तो भीड़ में से प्रभावित होने वाले कुछ यहूदियों ने एक दूसरे से यह कहते हुए, कि ''सचमुच यही वह भविष्यवक्ता है'' (यूहन्ना 7:40) व्यवस्थाविवरण 18:15 की बात को महान प्रचारक के साथ जोड़ा था।

सुलैमान के ओसारे में अपने प्रवचन में पतरस ने व्यवस्थाविवरण 18:15 को उद्धृत करते हुए कहा था कि यीशु का आना पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व की गई भविष्यवाणी का पूरा होना था (प्रेरितों 3:22)। उसने चेतावनी दी थी कि ''उस भविष्यवक्ता'' (प्रेरितों 3:23) की न मानने वालों का विनाश होगा। इसलिए, सही सोच वाले यहूदी ''भविष्यवक्ताओं की संतान'' (प्रेरितों 3:25) होने के कारण मूसा की भविष्यवाणी की बातों को शानदार ढंग से यीशु में पूरा होते देख पाए थे।

दृष्टांत में बातें करने वाला एक वक्ता (भजन संहिता 78:2)

आसाप इस्राएल में प्रसिद्ध था। गायक और झांझ बजाने में निपुण होने के कारण दाऊद ने उसे वेदी की गायक मण्डली का अधिकारी बना दिया था (1 इतिहास 6:31-33, 39; 15:19; 16:5)। उसे पवित्र आत्मा की ओर से भी दर्शी होने (2 इतिहास 29:30) और भजनों की पुस्तक लिखने के लिए आत्मा की प्रेरणा से गीत लिखने की सामर्थ भी दी थी (देखिए भजन संहिता 50, 73-83)। भजन संहिता 78 अध्याय की तरह निर्देश तथा सुधार के एक टुकड़े के रूप में लिखे गीत को *मश्कील* कहा जाता था। उसकी कुछ शिक्षा दृष्टांतों में थी अर्थात वह कहानियों के साथ उनकी प्रासंगिकता बताता था। उसने अन्य शिक्षाएं प्राचीनकाल की गुप्त बातों या पहेलियों में दी थीं। उसने यह घोषणा की, ''मैं अपना मुंह नीतिवचन कहने के लिए खोलूंगा; मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूंगा'' (भजन संहिता 78:2)।

पवित्र आत्मा ने आसाप की ही बातें उसके लिए भविष्यवाणी के रूप में प्रयुक्त कीं जो उसने करनी थीं जो आसाप से बड़ा था (मत्ती 13:35)। यीशु भी जगत के आरम्भ से गुप्त बातें बताकर इस्राएल में दृष्टांतों की शिक्षा देने वाला बनकर आया। यह आसाप ''भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई बातों को पूरा करने के लिए'' हुआ था कि ''मैं अपना मुंह दृष्टांतों में खोलूंगा; मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही हैं, प्रगट करूंगा। ''

अपने पिता के घर के लिए धुन (भजन संहिता 69:9)

शायद पवित्र वेदी के विरुद्ध किसी मज़ाक या उसके अपमान से दाऊद कह उठा था, ''क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते-जलते भस्म हुआ'' (भजन संहिता 69:9क)। निश्चय ही पवित्र आत्मा दाऊद के द्वारा भविष्यवाणी कर रहा था कि यीशु की भावना भी ऐसी ही होगी।

> और उस ने मन्दिर में बैल और भेड़ और कबूतर के बेचनेवालों और सर्राफों को बैठे हुए पाया। और रस्सियों का कोड़ा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया, और सर्राफों के पैसे बिथरा दिए, और पीढ़ों को उलट दिया। और कबूतर बेचनेवालों से कहा; इन्हें यहां से ले जाओ: मेरे पिता के भवन को ब्योपार का घर मत बनाओ। तब उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है, ''तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी'' (यूहन्ना 2:14-17)।

भजन संहिता 69:9 का दूसरा भाग, ''और जो निन्दा वे तेरी करते हैं वही निन्दा मुझको सहनी पड़ती है,'' संकेत देता है कि वेदी की सुरक्षा करते हुए दाऊद को उन दुष्ट लोगों की बुराई सहनी पड़ी थी जो पवित्र वेदी को अपवित्र कर रहे थे। दाऊद ने चाहे जिस भी परिस्थिति में यह बात कही हो, परन्तु आयत 9 का दूसरा भाग वह भविष्यवाणी भी था जो यीशु पर पूरी होनी थी। जब यीशु ने अपने पिता के घर का बचाव किया, तो उसने अपने

आप पर उन लोगों को आरोप लगाने दिया जो मन्दिर का दुरुपयोग कर रहे थे। वास्तव में, वह अपनी मृत्यु के लिए जल्दी कर रहा था। किसी भी प्रकार से वह स्वयं को प्रसन्न नहीं कर रहा था; उसका एकमात्र विचार था अपने पिता की पवित्रता। ''क्योंकि मसीह ने अपने आपको प्रसन्न नहीं किया, पर जैसा लिखा है, तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी'' (रोमियों 15:3)।

सब जातियों के लोगों को आशीष देने वाला (उत्पत्ति 12:3)

लगभग 1886 ई.पू. में, परमेश्वर ने अब्राम से प्रतिज्ञा की थी, ''भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे'' (उत्पत्ति 12:3)। यह दो हज़ार वर्ष पहले की गई भविष्यवाणी थी कि इब्रानी और अन्यजाति लोग अब्राम के द्वारा आशीष पाएंगे। आज हर कोई जो मसीह को ग्रहण करके मसीही बन जाता है वह मूल रूप में उत्पत्ति 12:3 में दी गई प्रतिज्ञा में भागीदार हो जाता है। पवित्र शास्त्र की उस आयत में पूर्वसूचना दी गई थी कि विश्वास के द्वारा परमेश्वर अन्यजातियों को धर्मी ठहराएगा। परमेश्वर ने पहले ही यह कहते हुए कि ''तुझ में सब जातियां आशीष पाएंगी'' (गलतियों 3:8) सुसमाचार का प्रचार कर दिया था। परिणाम यह है कि जितने भी विश्वासी हैं वे सभी उस विश्वासी अर्थात अब्राम के साथ आशीष पा रहे हैं। जितने भी लोग मसीह से जुड़े हैं वे अब्राम अर्थात ''उन्नत पिता'' का आत्मिक वंश बन गए हैं जो इब्राहीम जिसका अर्थ ''बहुतों का पिता'' के नाम से प्रसिद्ध हैं। संसार के लोगों में जो भी उस विश्वास के प्रति आज्ञाकारी हो जाता है वह वैधानिक तौर पर विश्वासियों के पिता से की गई ईश्वरीय प्रतिज्ञा का उत्तराधिकारी बन जाता है। इस प्रकार इब्राहीम के एक पुत्र यीशु (मत्ती 1:1) की ओर इशारा करती दो हज़ार वर्ष पुरानी भविष्यवाणी एक मनुष्य से एक जाति और फिर सभी जातियों तक इब्राहीम की आशिषों के जाने की व्यापक कड़ी के रूप में है। इस कारण, उत्पत्ति 12:3 मसीह सम्बन्धी एक बड़ी भविष्यवाणी है।

अन्यजातियों के लिए ज्योति (यशायाह 49:6)

परमेश्वर की प्रिय बुद्धि में भविष्यवाणी किए हुए उसके आने वाले सेवक के लिए केवल यहूदा के गोत्र की सेवा करना ही काफी नहीं था। उसने अपने आपको सारे संसार के लोगों के लिए बचाने वाली ज्योति के रूप में फैलाना था:

> उसी ने मुझ से यह भी कहा है, यह तो हलकी सी बात है
> कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले
> आने के लिए
> मेरा सेवक ठहरे;
> मैं तुझे अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराऊंगा

कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए (यशायाह 49:6)।

यह आदरणीय व्यक्ति कौन है जो परमेश्वर के सेवक के रूप में पहले से ही ठहराया गया है जिसकी सामर्थ परमेश्वर है ? (यशायाह 49:5)। इतना गुणी कौन है जो न केवल अपनों को ही बल्कि दूसरी जातियों को भी आशीष देता है ? मरियम की कोख में रूप लेने से पहले ही, यीशु प्रतिज्ञा किया हुआ बालक था। जिब्राइल ने उस डरी हुई नासरी कुंवारी को बताया, ''और देख, तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना'' (लूका 1:31)। यह पुत्र, गर्भ में आने से ही परमेश्वर का सेवक बना था, लोगों की सहायता के लिए जो भी कर सकता था, इसने किया। जितनों ने इसे ग्रहण किया, इसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दे दिया (यूहन्ना 1:12)। उसके अलावा, अपने प्रेरितों को आदेश देते हुए उसने कहा कि वे उसके सुसमाचार को सभी जातियों में ले जाएं। उसके प्रेरितों ने पहले यहूदियों और फिर अन्यजातियों में सुसमाचार देने का उसका ही ढंग अपनाया था।

पिसिदिया के अन्ताकिया में, जब यहूदियों ने प्रभु के सुसमाचार का विरोध किया, तो पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा:

> अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम्हें सुनाया जाता: परन्तु जबकि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं।
>
> क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है; कि मैं ने तुझे अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराया है; ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो (प्रेरितों 13:46, 47)।

लोगों के लिए झण्डा (यशायाह 11:10)

सुसमाचार के भविष्यवक्ता अर्थात यशायाह की भविष्यवाणी बड़ी स्पष्ट थी: ''उस समय यिशै की जड़ देश देश के लोगों के लिए एक झण्डा होगी; सब राज्यों के लोग उसे ढूंढ़ेंगे, और उसका विश्रामस्थान तेजोमय होगा'' (यशायाह 11:10)।

आठवीं शताब्दी ई.पू. में लगभग अविश्वसनीय भविष्यवाणियां हुईं। यिशै के वंशजों में से एक पर (यशायाह 11) परमेश्वर के आत्मा ने ठहरकर उसे विशेष बुद्धि प्रदान करनी थी। उसने देख और सुनकर नहीं (यशायाह 11:3, 4) बल्कि धर्म से न्याय करना था। उसने देखना था कि निर्धन तथा सताए हुए लोग अपना अधिकार पा लें (यशायाह 11:4)। दुष्ट लोग एक दिन उसके क्रोध को महसूस करेंगे (यशायाह 11:4)। प्रतीकात्मक रूप से ''उसकी कटि का फेंटा धर्म और उसके कर्म का फेंटा सच्चाई होगी'' (यशायाह 11:5)। उसी प्रकार प्रतीकात्मक रूप से, उसकी सामर्थ के दिन यशायाह ने कहा था ''भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा'' (यशायाह 11:6)। उसके पवित्र पहाड़ में कोई दमन या दुष्टता

नहीं पाई जाएगी, और इस शासक का ज्ञान सब लोगों में होगा (यशायाह 11:9)। वह लोगों के लिए चिह्न अर्थात झण्डा बन जाएगा और सब जातियों के लोग उसे ढूंढ़ेंगे (यशायाह 11:10)। उसका निवास तेजोमय होगा। पृथ्वी की चारों दिशाओं से इस्राएल के निकाले हुओं, यहूदा के सब बिखरे हुओं ने यिशै के वंशज को अपने झण्डे के रूप में देखना था (यशायाह 11:12)।

यिशै के पुत्रों में से केवल यीशु ही व्यापक और यशायाह की शानदार भविष्यवाणी को पूरा करता है (रोमियों 15:12)। नासरत के इस जवान अशिक्षित बढ़ई की बुद्धि ने अपने नगर के लोगों को हैरान कर दिया। वे पूछते थे ''यह कौन सा ज्ञान है जो उसको दिया गया है?'' (मरकुस 6:2)। सब्त के दिन उसने एक लंगड़े को चंगा करके यहूदियों को हैरान कर दिया था; यह भला काम करके उसे उनकी आलोचना भी सहनी पड़ी (यूहन्ना 7:23, 24)। उसने निष्कासित और घृणित लोगों के साथ सहानुभूति दिखाई (मत्ती 21:31; 9:10), जैसे यशायाह ने भविष्यवाणी की थी (यशायाह 11:4)। उसकी धार्मिकता को, जैसे कि यशायाह ने भविष्यवाणी की थी (11:5) पिलातुस की पत्नी की मुहर लगी जिसने उसे ''धर्मी'' मनुष्य कहा (मत्ती 27:19)।

अक्षरश:, यीशु ने कभी भी भेड़ियों को भेड़ों के साथ लेटाने का कोई प्रयास नहीं किया, और न ही उसकी कलीसिया ने कभी ऐसा किया है (यशायाह 11:6)। उसके दूसरी बार आने पर, जंगली जानवरों को पालने का समय नहीं होगा, क्योंकि उस समय सब कुछ आग में जलकर भस्म हो जाएगा (2 पतरस 3:10)। कोई यदि भेड़िए/भेड़ की भविष्यवाणी के अक्षरश: पूरा होने की राह देख रहा है, तो उसे निराशा ही होगी। परन्तु यदि कोई यह देखता है कि इसका अर्थ सांकेतिक है (जैसे यशायाह 11:5 में धर्मी को फेंटा कहा गया है) तो सब ठीक है।

सांकेतिक रूप में, भेड़िए के स्वभाव वाले लोग भेड़ों में बदल गए हैं और वे किसी बालक को हानि नहीं पहुंचाएंगे (देखिए यशायाह 65:17-25)। जानवरों के स्वभाव वाले लोग, नि:स्वार्थ प्रेम के मसीह के सुसमाचार की सामर्थ से दयालु और सहायता करने वाले लोग बन गए हैं। जब कोई इस सांकेतिक अर्थ को समझ कर पापी लोगों में इसके पूरा होने पर रोमांचित हो जाता है, तो उसे समझ आता है कि यदि केवल जंगली जानवरों को बाड़े में कैद करके पालतू ही बनाना होता तो सुसमाचार कितना कमजोर होता। निश्चय ही, यशायाह और यीशु के मन में कोई बड़ा उद्देश्य होगा।

''पवित्र पहाड़'' के विषय में सांकेतिक अर्थ आगे भी मिलता है, जो कि नये नियम की कलीसिया को कहा गया है (इब्रानियों 12:22, 23)। कलीसिया अर्थात सच्चाई के खम्भे, सुसमाचार का संदेश संसार में ऐसे फैल चुका है जैसे जल सागर की तलहटी को ढंकता है (यशायाह 11:9; देखिए कुलुस्सियों 1:5, 6)। यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए यीशु संदेशवाहक अर्थात लोगों का झण्डा बन चुका है! (देखिए यशायाह 49:22; 62:10; यूहन्ना 3:14-16; 12:32.)

यदि यिशै का पुत्र, यीशु, वह झण्डा नहीं है जिसकी बात यशायाह ने की थी, तो दुख

की बात है परमेश्वर का वचन भूमि पर गिर गया है। सत्तर ईस्वी में, वंशावली के दस्तावेज जिनसे यिशै के वंशजों का पता चलता था, नष्ट हो गए थे। यदि यिशै का सही पुत्र सत्तर ईस्वी से पहले अपना परिचय दिलाने, और यह प्रमाणित करने में असफल रहा कि वह यशायाह की भविष्यवाणी का झण्डा है, तो सारी मनुष्य जाति उदासी में ही मर जाती। कोई और आशा मानवीय आशाओं को प्रज्वलित नहीं कर सकती। यदि ऐसा है, तो तेजोमय भविष्य की यशायाह की रोमांचकारी बात केवल बेकार का सपना ही होगी जो कभी पूरी नहीं हो सकती। सत्तर ईस्वी से लेकर कोई भी व्यक्ति अपने आपको यिशै का वंश प्रमाणित नहीं कर सकता।

न्याय प्रकट करने वाला (यशायाह 42:1-4)

यशायाह 42:1–4 में किसी की भविष्यवाणी की गई जिसने पृथ्वी पर शांति से परन्तु अविजयी दृढ़ता से न्याय प्रकट करना था।

''मेरे दास को देखो जिसे मैं सम्भाले हूं,
मेरे चुने हुए को, जिससे मेरा जी प्रसन्न है;
मैं ने उस पर अपना आत्मा रखा है,
वह अन्यजातियों के लिए न्याय प्रगट करेगा।
न वह चिल्लाएगा और न ऊंचे शब्द से बोलेगा,
न सड़क में अपनी वाणी सुनाएगा।
कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा
और न टिमटिमाती बत्ती को बुझाएगा;
वह सच्चाई से न्याय चुकाएगा।
वह न थकेगा और न हियाव छोड़ेगा
जब तक वह न्याय को पृथ्वी पर स्थिर न करे;
और द्वीपों के लोग उसकी व्यवस्था की बाट जोहेंगे। ''

इस भविष्यवाणी में तीन बार ''न्याय'' शब्द मिलता है। सच्चाई से न्याय प्रकट करने वाले ने सनसनी फैलाने वाला या गलियों में लम्बे-लम्बे भाषण देने वाला नहीं होना था। उसने कुचले हुए नरकट को, पश्चात्तापी पापी को दूसरा अवसर देना था; वह भीतर ही भीतर जलने वाली बत्ती अर्थात एक दीन पापी में आशा की ज्योति जलती रहने देगा। उसने अपना काम पूरा करने तक हार नहीं माननी थी, और सब जातियों के न्याय के उसके सिद्धांतों की प्रतीक्षा करनी थी।

इतनी आशावादी और अर्थपूर्ण बातें किसके लिए कही जा सकती थीं? मत्ती के अनुसार, यीशु नासरी ही वह सेवक था जिसके विषय में प्राचीन काल से भविष्यवाणी की जाती रही है:

कि देखो, यह मेरा सेवक है, जिसे मैंने चुना है;
मेरा प्रिय जिस से मेरा मन प्रसन्न है,
मैं अपना आत्मा उस पर डालूंगा,
और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा।
वह न झगड़ा करेगा, और न धूम मचाएगा;
और न बाजारों में कोई उसका शब्द सुनेगा।
वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा;
और धुआं देती हुई बत्ती को न बुझाएगा
जब तक न्याय को प्रबल न कराए।
और अन्यजातियां उसके नाम पर आशा रखेंगी (मत्ती 12:18-21)।

अकारण उससे घृणा की गई (भजन संहिता 35:19; 69:4)

दाऊद आम तौर पर उस घृणा का शिकार होता था जिसका वह अधिकारी नहीं था। कम से कम दो बार, दाऊद ने उन असंख्य शत्रुओं के बारे में लिखा ''जो अकारण मेरे बैरी हैं'' (भजन संहिता 35:19); ''जो अकारण मेरे बैरी हैं, वे गिनती में मेरे सिर के बालों से अधिक हैं'' (भजन संहिता 69:4)।

इससे भी बढ़कर दुर्भावना का शिकार वह मनुष्य था जो पूरे मन से हर मनुष्य से प्रेम करता था और किसी को भी हानि नहीं पहुंचाना चाहता था। उसके दिल में कोई छल नहीं था (1 पतरस 2:22)। वह पवित्र, निर्दोष, दूषण रहित, पापियों से अलग व स्वर्ग में महिमा पाया हुआ था (इब्रानियों 7:26)। यीशु की दीनता और कोमलता (2 कुरिन्थियों 10:1) ने उसे सही सोच वाले सब लोगों का चहेता बना दिया था।

कितनी अजीब बात है कि ऐसा व्यक्ति अकारण ही किसी की घृणा का शिकार हो सकता है। फिर भी, उसकी इस अनापेक्षित और बिगड़ी हुई स्थिति की भविष्यवाणी हो चुकी थी: ''यदि मैं उन में वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया। और यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा है कि उन्होंने मुझ से व्यर्थ बैर किया'' (यूहन्ना 15:24, 25)।

उसके सौन्दर्य के अतिरिक्त, पवित्रता की सुन्दरता से ढके होने के अलावा उसके आश्चर्यकर्म भी उसकी सिफारिश थे (''जो और किसी ने नहीं किए''; यूहन्ना 15:24)। ये सब उसकी ईश्वरीयता पर संदेह करने वाले अधिकतर आलोचकों को कायल करने के लिए पर्याप्त प्रमाण होने चाहिए थे। परन्तु, कई लोग तो कायल होंगे ही नहीं; और मसायाह को नकारकर उनके पास ''उनके पाप के लिए कोई बहाना नहीं'' था (यूहन्ना 15:22)। उसके प्रेम के बदले उसे घृणा दी गई थी।

एक दीन राजा (जकर्याह 9:9)

परमेश्वर ने इस्राएल के राजाओं को आज्ञा दे रखी थी कि वे अपने लिए घोड़ों को न बढ़ाएं (व्यवस्थाविवरण 17:16)। सुलैमान ने, अपनी व्यर्थता और मानवीय सामर्थ पर भरोसा करके परमेश्वर के प्रतिबन्ध का उल्लंघन किया था (1 राजा 4:26)। मसायाह के सम्बन्ध में, जकर्याह ने इससे अधिक दीन सवारी की भविष्यवाणी की:

> हे सिय्योन बहुत ही मगन हो!
> हे यरूशलेम जयजयकार कर!
> क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है,
> वह दीन है, और गदहे पर
> बरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा।
> मैं एप्रैम के रथ और यरूशलेम के घोड़े नाश करूंगा;
> और युद्ध के धनुष तोड़ डाले जाएंगे, और वह अन्यजातियों से शान्ति की बातें कहेगा;
> वह समुद्र से समुद्र तक
> और महानद से पृथ्वी के दूर के देशों तक प्रभुता करेगा (जकर्याह 9:9, 10)।

जकर्याह की भविष्यवाणी इस बात में असाधारण है कि इस भविष्यवक्ता के लेखन के समय यहूदा में कोई राजा नहीं था (520 ई.पू.) और तब से लेकर यीशु को छोड़ और कोई राजा हुआ ही नहीं! भविष्यवक्ता की बातों का यीशु में पूरा होना हैरान करने वाला है:

> ... तो यीशु ने दो चेलों को यह कहकर भेजा। कि अपने साम्हने के गांव में जाओ, वहां पहुंचते ही एक गदही बन्धी हुई, और उसके साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा; उन्हें खोलकर, मेरे पास ले आओ। यदि तुम से कोई कुछ कहे, तो कहो, कि प्रभु को इन का प्रयोजन है: तब वह तुरन्त उन्हें भेज देगा। यह इसलिए हुआ, कि जो वचन भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो:
>
> कि सिय्योन की बेटी से कहो,
> देख, तेरा राजा तेरे पास आता है;
> वह नम्र है और गदहे पर बैठा है;
> बरन लादू के बच्चे पर।
>
> चेलों ने जाकर, जैसा यीशु ने उनसे कहा था, वैसा ही किया और गदही और बच्चे को लाकर, उन पर अपने कपड़े डाले, और वह उन पर बैठ गया और बहुतेरे लोगों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए, और अन्य लोगों ने पेड़ों से डालियां काटकर मार्ग में बिछाईं (मत्ती 21:1-8)।

यहूदा में राजसत्ता (उत्पत्ति 49:10)

लगभग 1644 ई.पू. में पुरखे याकूब ने गोशेन देश में अपनी मृत्यु शैय्या पर बैठकर अपने पुत्रों के लिए आशिषों की घोषणा की थी। यहूदा के सम्बन्ध में, पवित्र आत्मा ने याकूब के द्वारा भविष्यवाणी की थी,

> जब तक शीलो न आए
> तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा,
> न उसके वंश से व्यवस्था देने वाला अलग होगा;
> और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे (उत्पत्ति 49:10)।

यह भविष्यवाणी स्पष्ट और असाधारण थी। यहूदा पहलौठा पुत्र नहीं था (उत्पत्ति 49:3) और उसे पहलौठे का अधिकार भी नहीं मिला था (1 इतिहास 5:1)। परन्तु बुरी शुरुआत करने के बाद यहूदा इन्सानियत और नि:स्वार्थ प्रेम दिखाकर ''अपने भाइयों पर प्रबल हो गया'' (1 इतिहास 5:2)। भविष्य की ओर देखकर परमेश्वर ने निर्णय ले लिया था कि इस्राएल का अगुआ राजकुमार यहूदा से ही निकलेगा। अन्तत:, महान राजकुमार, अर्थात मसीहा यहूदा से ही निकलकर आना था (इब्रानियों 7:14)।

राजदण्ड अर्थात शासक की लाठी पकड़े यहूदा के वंशजों को लगभग छह सौ वर्ष गुजर जाने थे। तब यहूदा के वंशज दाऊद का दक्षिणी राज्य के राजा के रूप में और परिणामस्वरूप (लगभग 1010 ई.पू. में) उत्तरी राज्य पर भी राजा के रूप में अभिषेक हो जाना था।

पाप के कारण परमेश्वर ने यहूदा से राजा होने को निकाल दिया। 590 में सिदकिय्याह के विषय में कहा कि जितना सहन कर सकता था, उसने किया:

> और हे इस्राएल दुष्ट प्रधान, तेरा दिन आ गया है; अधर्म के अन्त का समय पहुंच गया है। ... पगड़ी उतार, और मुकुट भी उतार दे; वह ज्यों का त्यों नहीं रहने का; जो नीचा है उसे ऊंचा कर और जो ऊंचा है उसे नीचा कर। मैं इसको उलट दूंगा और उलट पुलट कर दूंगा; हां उलट दूंगा और जब तक उसका अधिकारी न आए तब तक वह उलटा हुआ रहेगा; तब मैं उसे दे दूंगा (यहेजकेल 21:25-27)।

यहेजकेल द्वारा की गई परमेश्वर की भविष्यवाणी चार वर्ष बाद पूरी हुई, जब उसने मूर्तिपूजक राजा नबूकदनेस्सर को अनुमति दी थी (2 राजा 25:1-7)।

पाप इतना फैल चुका था कि परमेश्वर ने यहूदा के वंशजों के किसी भी सांसारिक राजा को पूरी तरह से समाप्त करने का आदेश दे दिया था। विशेष तौर पर सिदकिय्याह के भतीजे यकुन्याह के लिए परमेश्वर ने यह कहा:

> इस पुरुष को निर्वंश लिखो,

उसका जीवनकाल कुशल से न बीतेता;
और न उसके वंश में से कोई भाग्यवान होकर
दाऊद की गद्दी पर विराजमान
वा यहूदियों पर प्रभुता करने वाला होगा (यिर्मयाह 22:30)।

यकुन्याह निस्संतान रहा और यहूदा में राज्य करने के लिए उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं था। फिर भी एक हज़ार वर्ष पूर्व यहूदा के लिए की गई परमेश्वर की भविष्यवाणी में यह दावा था कि शीलो अर्थात शांति देने वाले सुरक्षा के संदेशवाहक के आने तक यहूदा में राजदण्ड रहेगा। यकुन्याह वास्तव में निस्संतान नहीं था (मत्ती 1:12), परन्तु उसका कोई वंशज कभी भी भौतिक रूप से राजा नहीं बना था। राजदण्ड तो बना रहा, परन्तु यह सिदकिय्याह से यीशु तक शीलो है जो शान्ति देने वाला अर्थात सुरक्षा का संदेशवाहक था किसी काम का नहीं था!

यदि यीशु अपने प्रथम आगमन के समय सांसारिक यहूदा पर राजा बन जाता, या यदि उसने द्वितीय आगमन पर यरूशलेम में सांसारिक राजा बनना होता, तो यिर्मयाह के द्वारा की गई परमेश्वर की पुराने नियम की भविष्यवाणी बेकार हो जाती। पिन्तेकुस्त के दिन (मई 28, सन 30) जब यीशु आत्मिक राजा बनकर स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर शासन करने लगा, तो सोलह सौ वर्ष पहले की गई याकूब की वह भविष्यवाणी पूरी हुई:

जब तक शीलो न आए
तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा,
न उसके वंश से व्यवस्था देने वाला अलग होगा;
और राज्य, राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे (उत्पत्ति 49:10)।

शाखा (यिर्मयाह 23:5)

परमेश्वर ने अपने पुत्र के चित्रण के लिए जीव विज्ञान के शब्द *Tsemah*[2] अर्थात ''शाखा'' का इस्तेमाल किया। यीशु ने यिशै और दाऊद की वंशावली की डाली अर्थात शाखा होना था (यशायाह 11:1)। जहां तक शारीरिक सुन्दरता की बात है उसने निर्जल भूमि में से निकला अनचाहा अंकुर अर्थात ठूंठ होना था (यशायाह 53:2)। फिर भी आत्मिक रूप में, शाखा या अंकुर या डाली कहलाने वाले ने (जकर्याह 6:12) सबसे सुन्दर होना था। उसकी सुन्दरता में पवित्रता होनी थी, जो मनुष्य की संतानों में परम सुन्दर है (भजन संहिता 45:2)। उसकी महिमा पिता के इकलौते पुत्र वाली अर्थात अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होनी थी (यूहन्ना 1:14)। उसने प्रभु का मन्दिर (जकर्याह 6:13) अर्थात कलीसिया को बनाना था और राजा के रूप में शासन करना था। इस राजा ने न्याय और धार्मिकता का व्यवहार करते हुए बुद्धि से कार्य करना था (यिर्मयाह 23:5)।

Tsemah अर्थात शाखा ने न केवल अपने आत्मिक सिंहासन पर बैठकर शासन ही करना था, बल्कि उसने सिंहासन पर याजक के रूप में भी सेवा करनी थी। वंशावली से

उसने याजकाई के अयोग्य होना था। अपने पूर्वज दाऊद के द्वारा, वह यहूदा के गोत्र की एक शाखा थी, ''और इस गोत्र के विषय में मूसा ने याजक पद की कुछ चर्चा नहीं की'' (इब्रानियों 7:14)। इसलिए, भौतिक रूप में और अक्षरश:, उसने कभी भी याजक नहीं होना था। पृथ्वी पर लौटकर वह, ''कभी याजक न होता'' (इब्रानियों 8:4)।

उसकी याजकाई की तरह ही उसका राज्य भी आत्मिक और स्वर्गीय है। वह हमारा ऐसा महायाजक है जो स्वर्ग में प्रवेश करके महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा है (इब्रानियों 8:1)। महायाजक और राजा के रूप में वह शाखा अब मनुष्य नहीं रही और न ही दोबारा कभी मनुष्य बनेगी (2 कुरिन्थियों 5:16)। अपनों के पास लौटने पर वह दोबारा न तो देहधारी होगा और न ही इस पृथ्वी पर पांव रखेगा। इसके विपरीत, वह जी उठे, बदल चुके और अविनाशी शरीरों को जो उसकी अपनी तेजोमय देह की तरह होंगे, बादलों में अपने साथ मिलाने के लिए बुला लेगा (1 कुरिन्थियों 15:51, 52; फिलिप्पियों 3:20, 21; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-18)। *Tsemah* अर्थात शाखा के लिए बड़ी शानदार बातें कही गई हैं।

परमेश्वर के रूप में ताजपोश (भजन संहिता 45:6, 7)

''मनुष्य'' की पहचान के लिए प्रयुक्त होने वाले कुछ इब्रानी शब्द उसके सांसारिक (इब्रा.: *'adam*), कमज़ोर (इब्रा.: *'enosh*) स्वभाव की ओर संकेत करते हैं। अन्य शब्द ''मनुष्य'' को पति (इब्रा.: *'ish*) के रूप में, सामर्थी होने के रूप में (इब्रा.: *gibbor*) या परमेश्वर के स्वरूप के भागीदार (इब्रा.: *'elohim*) होने का संकेत देते हैं। परमेश्वर मनुष्य के स्वर्गीय स्वभाव की बात कर रहा था, ''तुम ईश्वर [इब्रा.: *'elohim*] हो, और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो'' (भजन संहिता 82:6)। इस प्रकार जिस शब्द का अनुवाद ''परमेश्वर'' (इब्रा.: *'elohim*) हुआ है वही शब्द मानवीय जीवों के वर्णन के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। अंग्रेजी अनुवाद (''gods'') और हिन्दी अनुवाद ''ईश्वर'' से यह भ्रम हो सकता है कि बहुत से ईश्वर हैं। परन्तु बाइबल की स्पष्ट शिक्षा है कि सच्चा परमेश्वर केवल एक ही है (व्यवस्थाविवरण 6:4; यशायाह 44:6; 1 कुरिन्थियों 8:2, 3)। इस शिक्षा के सत्य होने के कारण, भजन लिखने वाले द्वारा मनुष्यों और परमेश्वर के वर्णन के लिए एक ही शब्द के इस्तेमाल को मनुष्य के प्राण के स्वर्गीय स्वभाव के रूप में लेना चाहिए। इलोहीम (''परमेश्वर'') किसी जानवर को नहीं, बल्कि मनुष्य को कहा गया है।

इन दो अर्थों (''परमेश्वर'' और ''परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्य'') में इलोहीम शब्द के स्पष्ट इस्तेमाल से हमें भजन संहिता 45:6, 7 को समझने में सहायता मिलती है:

> हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा;
> तेरा राजदण्ड न्याय का है
> तू ने धर्म से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है
> इस कारण परमेश्वर ने हां तेरे परमेश्वर ने तुझ को तेरे साथियों से अधिक

हर्ष के तेल से अभिषेक किया है।

भजन संहिता 45 को मूलत: सुलैमान के विवाहों में से एक के लिए कहा गया था। 6 और 7 आयतों में नये पति की तारीफ की गई है: वह धर्मी राजा है, और वह परमेश्वर (अर्थात परमेश्वर का स्वरूप) है।

परन्तु, भजन संहिता 45:6, 7 का उसमें पूरा होना अभी शेष था ''जो सुलैमान से भी बड़ा है'' (मत्ती 12:42)। ''चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं; और न दास अपने स्वामी से'' (मत्ती 10:24), परन्तु सुलैमान का पुत्र अपने पूर्वज से बड़ा था। 30 ईस्वी के पिन्तेकुस्त वाले दिन, स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ यीशु मसीह को स्वर्ग और पृथ्वी का राजा बनाया गया था (इफिसियों 1:22, 23; मत्ती 28:18)। उसके राज्याभिषेक के दिन, परमेश्वर पिता ने पहले सुलैमान के लिए इस्तेमाल की गई भाषा को अपनाकर उसकी उन्नति की थी:

> परन्तु पुत्र से [परमेश्वर] कहता है,
> कि हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा:
> तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है।
> तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा;
> इस कारण परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों से बढ़कर
> हर्षरूपी तेल से तुझे अभिषेक किया (इब्रानियों 1:8, 9)।

परमेश्वर ने सुलैमान और यीशु के शासन के लिए एक ही शब्द ''धर्म'' का इस्तेमाल किया; परन्तु यीशु पर लागू करने पर इसका अर्थ और दर्जा बढ़ गया। इसी प्रकार, वही शब्द ''परमेश्वर'' (अर्थात, सुलैमान में परमेश्वर का स्वरूप) जो सुलैमान के वर्णन के लिए प्रयुक्त किया गया था, वही यीशु (अर्थात ईश्वर) के स्वभाव के वर्णन के लिए भी इस्तेमाल किया गया था, परन्तु सुलैमान पर लागू करने के बजाय यीशु पर लागू करने के समय इसका अर्थ बहुत विस्तृत हो जाता है।

पाद टिप्पणियां

[1]मसायाह के जन्म तथा जीवन सम्बन्धी पुराने नियम की अतिरिक्त भविष्यवाणियां *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक, ''बाइबल के विषय में सीखना'' में दी गई हैं। ये भविष्यवाणियां मसीह में पूरा होते दिखाई गई थीं: ''दाऊद का पुत्र'' (2 शमूएल 7:12), ''एक बैतलहमी'' (मीका 5:2), और ''मिसर से बुलाया गया'' (होशे 11:1)। [2]यीशु के लिए ''अंकुर'' के लिए *hoter* और *netser* (यशायाह 11:1) और *yonek* (यशायाह 53:2) सहित वनस्पति विज्ञान के दूसरे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है।